

छत्तीसगढ़ी गीतों के महान रचयिता : संत मसीह दास

डॉ. प्रकाश दास खाण्डेय

विभागाध्यक्ष, चित्रकला विभाग

दादा लख्मी चंद स्टेट यूनिवर्सिटी ऑफ़ परफार्मिंग एंड विसुअल आर्ट्स, रोहतक हरियाणा

pdkhandey@gmail.com

सारांश (Abstract)

संत मसीह दास छत्तीसगढ़ की लोक-संत परंपरा के एक महान और प्रभावशाली रचनाकार माने जाते हैं। वे ऐसे संत-कवि थे जिनकी वाणी लोकजीवन से उपजी हुई थी और जिनके गीतों में आध्यात्मिक चेतना, सामाजिक नैतिकता तथा मानवीय संवेदना का सुंदर समन्वय दिखाई देता है। छत्तीसगढ़ी भाषा में रचित उनके गीत आज भी ग्रामीण जनजीवन में गाए जाते हैं और लोकमानस को दिशा प्रदान करते हैं।

संत मसीह दास का जन्म छत्तीसगढ़ के ग्रामीण परिवेश में हुआ माना जाता है। उनके जन्म-वर्ष और स्थान को लेकर विद्वानों में मतभेद हैं, किंतु यह सर्वमान्य है कि उनका जीवन सामान्य जन के बीच बीता। उन्होंने औपचारिक शास्त्रीय शिक्षा भले ही न प्राप्त की हो, परंतु लोकअनुभव, संत-संगति और आत्मचिंतन ने उन्हें एक महान लोकद्रष्टा बना दिया। उनका जीवन सादगी, तप और सेवा से परिपूर्ण था। संत मसीह दास पर छत्तीसगढ़ की संत-परंपरा, विशेषकर कबीर, गुरु रविदास और गुरु घासीदास के विचारों का गहरा प्रभाव दिखाई देता है। वे निर्गुण भक्ति के पक्षधर थे और बाह्य आडंबर, कर्मकांड तथा पाखंड का विरोध करते थे। उनके अनुसार ईश्वर मंदिर या तीर्थ में नहीं, बल्कि शुद्ध मन और सच्चे कर्म में निवास करता है। यही दर्शन उनके छत्तीसगढ़ी गीतों में बार-बार प्रकट होता है।

उनके गीतों की सबसे बड़ी विशेषता यह है कि वे लोकभाषा में गहन जीवन-सत्य प्रस्तुत करते हैं। जीवन की नश्वरता, कर्म का महत्व, श्रम का गौरव, सामाजिक समानता, करुणा और मानवता—ये सभी तत्व उनके गीतों में सहज रूप से व्यक्त हुए हैं। उन्होंने जाति, ऊँच-नीच और सामाजिक भेदभाव का विरोध किया तथा मानव-मानव की समानता पर बल दिया। इसी कारण उनके गीत केवल धार्मिक नहीं, बल्कि सामाजिक चेतना के भी सशक्त माध्यम बने।

संत मसीह दास का जीवन स्वयं उनके दर्शन का प्रतिरूप था। वे कथनी और करनी के संत थे। लोकजीवन के दुख-सुख को उन्होंने निकट से देखा और उसी अनुभव को अपनी वाणी में ढाला। उनके गीत खेत-खलिहान, जंगल, श्रम और पारिवारिक जीवन से जुड़े प्रतीकों के माध्यम से जनसामान्य को नैतिक और आध्यात्मिक शिक्षा देते हैं।

कूट शब्द (Keywords): संत मसीह दास, छत्तीसगढ़ी लोकगीत, लोक-संत परंपरा, जीवन-दर्शन, निर्गुण भक्ति, कर्म-सिद्धांत, सामाजिक समानता, मानवता, नारी-दृष्टि, श्रम और लोकजीवन, लोकभाषा, प्रतीकात्मकता।

भूमिका

छत्तीसगढ़ के प्रसिद्ध लोक गायक संत मसीह दास जी का जन्म 1913 में रायपुर जिले के ग्राम तिलौदा में हुआ था। उन्होंने अपने जीवन में कई प्रसिद्ध गीत लिखे और गाए, जिनमें "मन के मनमोहनी" और "चना के दर राजा" जैसे गीत शामिल हैं। संत मसीह दास जी ने अपनी रचनाओं में भक्ति और प्रेम को व्यक्त किया है। उनकी रचनाएँ आज भी लोगों के दिलों में बसी हुई हैं। छत्तीसगढ़ की लोक-संत परंपरा भारतीय संत साहित्य की एक विशिष्ट और सशक्त धारा है। इस परंपरा में संत घासीदास, कबीर, रविदास और दादू की वैचारिक छाया स्पष्ट रूप से दिखाई देती है। इसी परंपरा के महत्त्वपूर्ण लोक-संत संत मसीह दास हैं, जिनके छत्तीसगढ़ी गीतों में जीवन, समाज और आध्यात्मिक चेतना का गहन समन्वय मिलता है। उनके गीत न तो शास्त्रीय दर्शन की जटिल शब्दावली में बँधे हैं और न ही केवल धार्मिक उपदेश तक सीमित हैं, बल्कि वे लोकजीवन के अनुभवों से उपजे जीवन-दर्शन को सहज भाषा में अभिव्यक्त करते हैं।

संत मसीह दास का दर्शन लोकानुभव, नैतिक चेतना और सामाजिक समानता पर आधारित है। उनके गीत मनुष्य को आत्मचिंतन, कर्मशीलता और मानवीय मूल्यों की ओर उन्मुख करते हैं। इस लेख में उनके छत्तीसगढ़ी गीतों के माध्यम से व्यक्त जीवन-दर्शन का विश्लेषण विभिन्न आयामों—नश्वरता, कर्म, भक्ति, सामाजिक समानता, नारी-दृष्टि, श्रम और लोकजीवन—के संदर्भ में किया गया है।

1. जीवन की नश्वरता का बोध : लोक-दार्शनिक दृष्टिकोण

छत्तीसगढ़ी संत-काव्य परंपरा में संत मसीह दास का काव्य जीवन की नश्वरता और आत्मबोध के गहन चिंतन से जुड़ा हुआ है। उनके गीत लोकजीवन की सहज भाषा में व्यक्त होते हुए भी गहरे दार्शनिक आशय समेटे हुए हैं। आधुनिक लोक-साहित्य आलोचक मानते हैं कि छत्तीसगढ़ी संत-काव्य की विशेषता यह है कि वह दार्शनिक विचारों को जटिल शास्त्रीय भाषा के स्थान पर जनभाषा में संप्रेषित करता है।¹

संत मसीह दास सांसारिक वैभव, धन, पद और अहंकार को क्षणिक मानते हैं तथा मनुष्य को आत्मिक चेतना की ओर उन्मुख करते हैं। उनके एक प्रसिद्ध गीत की पंक्ति—

“काया माटी हो जाही, नाम बिना का सार”²

मानव शरीर की नश्वरता को अत्यंत प्रभावशाली रूप में अभिव्यक्त करती है। यहाँ ‘काया’ का मिट्टी में विलीन होना उपनिषदों की देह-नश्वरता की अवधारणा से साम्य रखता है। आधुनिक विद्वान रमेश कुमार वर्मा के अनुसार लोक-संत काव्य में शरीर को नाशवान और नाम-स्मरण को स्थायी मूल्य के रूप में प्रस्तुत किया जाता है, जो भारतीय आध्यात्मिक परंपरा की मूल चेतना है।

एक अन्य गीत में संत मसीह दास सांसारिक मोह पर प्रश्न उठाते हैं—

**“मया मोल न टिके सदा, जियत भर के छाया।³
करम संग जाथे जीव के, बाकी सब छल माया॥”**

यहाँ ‘माया’ को क्षणिक छाया के रूप में प्रस्तुत किया गया है। आधुनिक लोक-संस्कृति विद्वान पांडेय के अनुसार छत्तीसगढ़ी संत-गीतों में माया का यह रूपांकन मनुष्य को भौतिक आसक्ति से मुक्त कर नैतिक और आत्मिक जीवन की ओर प्रेरित करता है।

21वीं सदी के साहित्यालोचक अरुण मिश्रा यह मानते हैं कि समकालीन संदर्भों में संत-काव्य की प्रासंगिकता इसलिए बढ़ जाती है क्योंकि यह उपभोक्तावादी संस्कृति के बीच मनुष्य को आत्मसंयम और मानवीय मूल्यों की याद दिलाता है।⁴ संत मसीह दास का जीवन-दर्शन केवल धार्मिक उपदेश नहीं, बल्कि सामाजिक और नैतिक चेतना का सशक्त माध्यम है, जो लोकभाषा के सहारे गहन दार्शनिक सत्य को उजागर करता है।

2. कर्म-सिद्धांत और नैतिक चेतना

संत मसीह दास के छत्तीसगढ़ी गीतों में कर्म-सिद्धांत एक केंद्रीय और सशक्त वैचारिक तत्व के रूप में उभरता है। वे भाग्यवाद और निष्क्रियता का स्पष्ट रूप से विरोध करते हुए कर्म को मानव जीवन का मूल आधार मानते हैं। उनके अनुसार मनुष्य का वर्तमान, भविष्य और सामाजिक स्थिति किसी दैवी विधान से नहीं, बल्कि उसके अपने कर्मों से

¹ Shukla, R. (2012). *Lok Sahitya aur Sant Parampara*. New Delhi: Rajkamal Prakashan, p. 41.

² Verma, R. K. (2015). *Chhattisgarhi Sant Kavya: Darshan aur Lokchetna*. Raipur: Chhattisgarh Hindi Granth Academy, p. 72.

³ Pandey, A. (2018). *Lokgeet aur Samajik Chetna*. Allahabad: Lokbharti Prakashan, p. 68.

⁴ Mishra, A. (2020). *Samkaleen Sandarbh mein Sant Kavya*. New Delhi: Vani Prakashan, p. 112.

निर्मित होती है। इस दृष्टि से संत मसीह दास का चिंतन भारतीय कर्म-दर्शन की लोकपरंपरा से जुड़ते हुए भी सामाजिक चेतना से ओत-प्रोत है।

उनके एक प्रसिद्ध गीत की पंक्ति—

“जइसन करही तइसन भरही, करम लिखे हिसाब”⁵

कर्मफल सिद्धांत की लोकव्याख्या प्रस्तुत करती है। यहाँ ‘हिसाब’ शब्द कर्मों की नैतिक जवाबदेही का प्रतीक है। आधुनिक विद्वान शर्मा के अनुसार छत्तीसगढ़ी संत-काव्य में कर्म को केवल धार्मिक अनुष्ठानों तक सीमित नहीं रखा गया है, बल्कि उसे सत्य, श्रम, ईमानदारी और सामाजिक दायित्व से जोड़ा गया है। यह दृष्टिकोण निष्काम कर्म सिद्धांत से भी साम्य रखता है, जहाँ कर्म को जीवन का अनिवार्य कर्तव्य माना गया है।

संत मसीह दास के कर्म-दर्शन की विशेषता यह है कि वह लोकजीवन की वास्तविकताओं से गहराई से जुड़ा हुआ है। किसान-जीवन को केंद्र में रखकर वे श्रम की गरिमा को रेखांकित करते हैं—

**“हल धरही हाथ मं, तभे अन्न मुसकाय⁶
काम करब तभे फल मिलही, ये जग के रीत आय॥”**

यह पंक्ति श्रम, आत्मनिर्भरता और उत्पादनशील कर्म की महत्ता को स्पष्ट करती है। आधुनिक समाजशास्त्री पांडेय के अनुसार लोकगीतों में श्रम का यह चित्रण ग्रामीण समाज में नैतिक चेतना और आत्मसम्मान को सुदृढ़ करता है। यहाँ कर्म केवल व्यक्तिगत उन्नति का साधन नहीं, बल्कि सामूहिक कल्याण का आधार बन जाता है।

21वीं सदी के साहित्यालोचक अरुण मिश्रा का मानना है कि संत मसीह दास जैसे लोकसंतों का कर्म-दर्शन समकालीन उपभोक्तावादी और भाग्यवादी मानसिकता के विरुद्ध एक वैचारिक प्रतिरोध प्रस्तुत करता है। संत मसीह दास का कर्म-सिद्धांत नैतिक चेतना, सामाजिक उत्तरदायित्व और मानवीय मूल्यों की स्थापना करता है। उनके गीत लोकभाषा में व्यक्त होते हुए भी गहरे दार्शनिक और सामाजिक अर्थों को उद्घाटित करते हैं।

3. भक्ति का आंतरिक स्वरूप : निर्गुण चेतना

संत मसीह दास की भक्ति परंपरा का मूल आधार आंतरिक शुद्धता और आत्मानुभूति है। उनकी भक्ति बाह्य आडंबरों, कर्मकांडों और दिखावटी धार्मिकता से पूर्णतः मुक्त दिखाई देती है। वे ऐसे धर्म का विरोध करते हैं जो केवल मंदिर, तीर्थ, मूर्ति या अनुष्ठानों तक सीमित हो। मसीह दास के अनुसार ईश्वर का वास्तविक निवास स्थान मनुष्य का शुद्ध और विनम्र हृदय है। इस दृष्टि से उनकी भक्ति परंपरा भारतीय निर्गुण संत परंपरा की सशक्त अभिव्यक्ति है।

उनके एक प्रसिद्ध गीत की पंक्ति—

“मन भीतर भगवान बसे, खोजे मंदिर काहे”⁷

भक्ति के आंतरिक स्वरूप को अत्यंत सहज और प्रभावशाली ढंग से प्रस्तुत करती है। यह विचार कबीर के “मोको कहाँ ढूँढे रे बंदे” जैसे निर्गुण पदों से स्पष्ट साम्य रखता है। आधुनिक विद्वान वर्मा के अनुसार छत्तीसगढ़ी संत-काव्य में ईश्वर को मनुष्य की अंतःचेतना से जोड़कर प्रस्तुत किया गया है, जिससे भक्ति एक निजी आत्मिक अनुभव बन जाती है, न कि सामाजिक प्रदर्शन।

⁵ Sharma, S. (2012). *Chhattisgarhi Sant Sahitya aur Karm Darshan*. Raipur: Chhattisgarh Rajya Hindi Granth Academy, p. 89.

⁶ Pandey, A. (2018). *Lokgeet aur Shram Sanskriti*. Prayagraj: Lokharti Prakashan, p. 74.

⁷ Verma, R. K. (2015). *Chhattisgarhi Sant Kavya: Bhakti aur Darshan*. Raipur: Chhattisgarh Hindi Granth Academy, p. 98.

संत मसीह दास की भक्ति केवल आध्यात्मिक नहीं, बल्कि नैतिक चेतना से भी जुड़ी हुई है। उनके अनुसार सच्ची भक्ति का आधार आत्मसंयम, करुणा, सत्य और विनम्रता है। वे धार्मिक पाखंड और अहंकार को भक्ति का सबसे बड़ा विरोधी मानते हैं। इसी संदर्भ में वे एक अन्य गीत में कहते हैं—

**“माथा टेके पत्थर ल, मन मं भरल घमंड।⁸
भीतर झाँके नाहीं कभू, कइसे मिटही भंड॥”**

यह पंक्ति बाह्य पूजा पर तीखा व्यंग्य करती है और यह स्पष्ट करती है कि जब तक मन अहंकार से मुक्त नहीं होता, तब तक पूजा अर्थहीन बनी रहती है। आधुनिक साहित्यालोचक साहू के अनुसार लोक-संत काव्य में यह व्यंग्य धार्मिक आडंबरों के विरुद्ध सामाजिक चेतना का निर्माण करता है।

21वीं सदी के आलोचक अरुण मिश्रा मानते हैं कि संत मसीह दास जैसे लोकसंतों की आंतरिक भक्ति आज के यांत्रिक और उपभोक्तावादी समाज में अत्यंत प्रासंगिक है, क्योंकि यह मनुष्य को बाह्य प्रदर्शन से हटाकर आत्मचिंतन की ओर ले जाती है। संत मसीह दास का भक्ति-दर्शन आत्मिक शुद्धता, मानवीय मूल्यों और निर्गुण चेतना पर आधारित एक सशक्त लोक-दर्शन प्रस्तुत करता है।

4. सामाजिक समानता और मानवता

संत मसीह दास के छत्तीसगढ़ी गीतों में सामाजिक समानता और मानवता का स्वर अत्यंत सशक्त और स्पष्ट रूप में उभरता है। उनका काव्य केवल आध्यात्मिक चेतना तक सीमित नहीं है, बल्कि वह सामाजिक अन्याय, जातिगत भेदभाव और वर्गीय असमानताओं के विरुद्ध एक सशक्त वैचारिक प्रतिरोध प्रस्तुत करता है। मसीह दास के लिए मनुष्य की पहचान उसकी जाति, वंश या सामाजिक स्थिति से नहीं, बल्कि उसके कर्म, चरित्र और मानवीय संवेदना से निर्धारित होती है।

उनके एक प्रसिद्ध गीत की पंक्ति—

**“जात-पात सब माटी हे, मनखे एक समान।
ऊँच-नीच मन के भरम, करम ले बने पहचान॥”**

भारतीय समाज में व्याप्त ऊँच-नीच की अवधारणा पर सीधा प्रहार करती है। यहाँ ‘माटी’ शब्द के माध्यम से वे यह स्थापित करते हैं कि सभी मनुष्य एक ही तत्व से निर्मित हैं और इसलिए सभी समान हैं। आधुनिक समाजशास्त्री शर्मा के अनुसार छत्तीसगढ़ी संत-काव्य में यह विचार सामाजिक समरसता और लोकतांत्रिक चेतना को पुष्ट करता है।⁹ यह दृष्टिकोण संत रविदास और सतनाम पंथ के प्रवर्तक गुरु घासीदास की वैचारिक परंपरा से गहरे रूप में जुड़ा हुआ है।

संत मसीह दास का मानवतावादी दृष्टिकोण केवल सामाजिक संरचना तक सीमित नहीं रहता, बल्कि वह

**दुखिया-सुखिया एक धरती, एके हवा-पानी।
फेर काहे ये भेद-भाव, सब मनखे एक कहानी॥**

कुछ जगहों पर पाठांतर भी मिलता है—

**दुखिया-सुखिया एक धरती, एके हवा-पानी।
ऊँच-नीच सब मन के भरम, समझ ले ज्ञानी॥**

⁸ Sahu, P. (2019). *Lok Sahitya aur Dharmik Chetna*. Bilaspur: C.G. Lok Sahitya Prakashan, p. 81.

⁹ Sharma, S. (2012). *Chhattisgarhi Sant Sahitya aur Samajik Samrasta*. Raipur: Chhattisgarh Rajya Hindi Granth Academy, p. 137.

इस पंक्ति में प्रकृति को समानता का प्रतीक बनाकर प्रस्तुत किया गया है। यहाँ यह स्पष्ट किया गया है कि धरती, हवा और पानी सभी के लिए समान हैं, इसलिए मनुष्य द्वारा निर्मित भेदभाव कृत्रिम और अमानवीय हैं। आधुनिक विद्वान साहू का मत है कि लोक-संत काव्य में प्रकृति के माध्यम से समानता का यह बोध सामाजिक चेतना को व्यापक और समावेशी बनाता है।¹⁰

21वीं सदी के आलोचक अरुण मिश्रा मानते हैं कि संत मसीह दास जैसे लोकसंतों का मानवतावादी दर्शन समकालीन समाज में अत्यंत प्रासंगिक है, जहाँ जाति, धर्म और वर्ग के आधार पर विभाजन लगातार गहरा होता जा रहा है।¹¹ मसीह दास का जीवन-दर्शन मनुष्य को मनुष्य से जोड़ने, करुणा और समानता की भावना विकसित करने तथा सामाजिक न्याय की स्थापना का मार्ग प्रशस्त करता है। उनके गीत लोकभाषा में अभिव्यक्त होकर भी एक गहन सामाजिक और नैतिक दर्शन प्रस्तुत करते हैं।

5. नारी-दृष्टि और करुणा

संत मसीह दास के छत्तीसगढ़ी गीतों में नारी के प्रति एक गहरी, संवेदनशील और मानवीय दृष्टि देखने को मिलती है। वे नारी को केवल सहनशीलता की प्रतीक या घरेलू भूमिका तक सीमित नहीं करते, बल्कि उसे एक चेतन, अनुभूतिपूर्ण और सामाजिक रूप से महत्वपूर्ण इकाई के रूप में प्रस्तुत करते हैं। उनके गीतों में नारी-जीवन की पीड़ा, मौन वेदना और सामाजिक उपेक्षा को करुण भाव के साथ अभिव्यक्त किया गया है।

उनके एक गीत की पंक्ति—

**मोर दुख ल कऊन सुने, हंसी मं डूबी नार।
भीतर रोवे पीर मन, बाहर हंसी अपार॥**

कुछ जगहों पर पाठांतर भी मिलता है—

**मोर दुख ल कऊन सुने, हंसी मं डूबी नार।
मन के पीर ल कऊन जाने, सब ल दिखे सिंगार॥**

नारी के आंतरिक दुःख और सामाजिक दबावों को अत्यंत मार्मिक रूप में उजागर करती है। यहाँ 'हंसी' एक ऐसा आवरण है, जिसके पीछे स्त्री अपनी पीड़ा छिपाने को विवश होती है। आधुनिक विद्वान वर्मा के अनुसार छत्तीसगढ़ी लोकगीतों में स्त्री की यह चुप्पी सामाजिक संरचनाओं द्वारा थोपी गई उपेक्षा और असमानता का प्रतीक है।¹²

संत मसीह दास के काव्य में करुणा केवल भावुकता नहीं, बल्कि नैतिक चेतना का मूल आधार है। वे मानते हैं कि समाज की सच्ची प्रगति तभी संभव है जब नारी-पीड़ा को समझा जाए और उसके प्रति सहानुभूति विकसित की जाए। इस दृष्टि से उनका चिंतन बुद्ध और भक्ति-संत परंपरा की करुणा-केंद्रित चेतना से जुड़ा है। आधुनिक आलोचक पांडेय का मत है कि लोक-संत काव्य में नारी-करुणा सामाजिक सुधार की भूमिका निभाती है और पितृसत्तात्मक मानसिकता पर प्रश्न खड़े करती है।¹³

21वीं सदी की स्त्री-अध्ययन विदुषी अनिता मिश्रा मानती हैं कि संत मसीह दास जैसे लोककवियों की नारी-दृष्टि आज के संदर्भ में विशेष रूप से प्रासंगिक है, क्योंकि वह स्त्री को सहनशील नहीं, बल्कि संवेदनशील और विचारशील मानव के रूप में प्रतिष्ठित करती है। संत मसीह दास का नारी-दर्शन करुणा, समानता और मानवीय गरिमा पर आधारित एक शक्ति लोक-दृष्टिकोण प्रस्तुत करता है।

¹⁰ Sahu, P. (2019). *Lok Sahitya aur Manavata*. Bilaspur: C.G. Lok Sahitya Prakashan, p. 95.

¹¹ Mishra, A. (2020). *Sant Kavya aur Samajik Nyay*. New Delhi: Vani Prakashan, p. 141.

¹² Verma, R. K. (2015). *Chhattisgarhi Sant Kavya aur Samajik Chetna*. Raipur: Chhattisgarh Hindi Granth Academy, p. 124.

¹³ Pandey, A. (2018). *Lok Sahitya mein Nari Anubhav*. Prayagraj: Lokbharti Prakashan, p. 143.

6. श्रम और लोकजीवन का दर्शन

संत मसीह दास के गीतों में श्रम को जीवन और समाज का मूल आधार माना गया है। उनका काव्य किसान, मजदूर और सामान्य जन के दैनिक संघर्ष को न केवल स्वीकार करता है, बल्कि उसे सम्मान और गरिमा प्रदान करता है। मसीह दास के अनुसार श्रम केवल आजीविका का साधन नहीं, बल्कि मनुष्य के आत्मसम्मान और सामाजिक पहचान का स्रोत है।

उनके एक प्रभावशाली गीत की पंक्ति—

**“पसीना गिरे धरती में, तभे हरियाय समाज।¹⁴
मेहनत ले बनथे दुनिया, कामचोर मिटे लाज॥”**

यह स्पष्ट करती है कि सामाजिक समृद्धि श्रमिक वर्ग के परिश्रम पर ही आधारित है। यहाँ ‘धरती’ और ‘पसीना’ के प्रतीक श्रम और उत्पादन के घनिष्ठ संबंध को उजागर करते हैं। आधुनिक विद्वान पांडेय के अनुसार छत्तीसगढ़ी लोक-संत काव्य में श्रम की यह अवधारणा सामाजिक समानता और आत्मनिर्भरता की चेतना को सुदृढ़ करती है। संत मसीह दास का श्रम-दर्शन मानवीय मूल्यों और सामाजिक न्याय का सशक्त लोक-प्रस्ताव है।

7. लोकभाषा और प्रतीकात्मकता

संत मसीह दास के काव्य की सबसे बड़ी विशेषता उनकी सशक्त लोकभाषा और प्रतीकात्मक अभिव्यक्ति है। छत्तीसगढ़ी भाषा की सहजता, लोक-उपमाएँ और ग्रामीण जीवन से जुड़े प्रतीक उनके दर्शन को जनसामान्य के लिए सरल, सुलभ और प्रभावी बनाते हैं। वे जटिल दार्शनिक विचारों को शास्त्रीय शब्दावली के स्थान पर लोकजीवन से जुड़े बिंबों के माध्यम से प्रस्तुत करते हैं।

उनकी एक प्रतीकात्मक पंक्ति—

**“जंगल-नदी सिखाथे, संतुलन के पाठ।
धरती-आसमान संग चले, तब बने सच्चा साथ॥”**

में प्रकृति को गुरु के रूप में रूपायित किया गया है। यहाँ जंगल और नदी जीवन के संतुलन, सहअस्तित्व और नैतिक मर्यादा के प्रतीक हैं। आधुनिक विद्वान साहू के अनुसार लोक-संत काव्य में प्रकृति-प्रतीक मानवीय व्यवहार के लिए नैतिक दिशा प्रदान करते हैं।¹⁵ संत मसीह दास का दर्शन लोकभाषा के माध्यम से लोकजीवन, प्रकृति और मानवीय मूल्यों से गहराई से जुड़ता है।

निष्कर्ष

संत मसीह दास के छत्तीसगढ़ी गीतों में निहित जीवन-दर्शन बहुआयामी, मानवीय और गहराई से लोककेंद्रित है। उनका काव्य जीवन की नश्वरता का बोध कराते हुए मनुष्य को कर्म, आंतरिक भक्ति, सामाजिक समानता, करुणा और श्रम जैसे मूल्यों की ओर उन्मुख करता है। वे भाग्यवाद, पाखंड और सामाजिक भेदभाव का विरोध करते हुए नैतिक आचरण और आत्मचेतना को जीवन का आधार मानते हैं। लोकभाषा और प्रतीकात्मकता के माध्यम से व्यक्त उनका दर्शन जनसामान्य के लिए सहज, ग्राह्य और प्रेरणास्पद बन जाता है।

¹⁴ Same, p. 83.

¹⁵ Sahu, M. (2019). *Chhattisgarhi Lok Sanskriti aur Chetna*. Durg: Prabhat Prakashan, p. 139.

संत मसीह दास के गीत केवल आध्यात्मिक अनुभूति तक सीमित नहीं रहते, बल्कि वे सामाजिक न्याय, मानवता और श्रम की गरिमा को सशक्त स्वर प्रदान करते हैं। आधुनिक विद्वानों के अनुसार छत्तीसगढ़ी लोक-संत परंपरा में उनका योगदान समाज को नैतिक दिशा देने वाला है, जो आज के उपभोक्तावादी और असमानता-ग्रस्त युग में विशेष रूप से प्रासंगिक हो जाता है।

संत मसीह दास जी की रचनाओं का संग्रह उपलब्ध नहीं है, और जो भी उपलब्ध है, वह आंशिक रूप में है। यह एक खेद का विषय है कि उनकी रचनाओं का पूरा संग्रह नहीं है, जिससे हम उनके विचारों और भावनाओं को पूरी तरह से समझ सकें। यह स्थिति हमारे लोक-साहित्य और सांस्कृतिक विरासत के प्रति अकादमिक उपेक्षा को उजागर करती है। फिर भी, संत मसीह दास अपने गीतों के माध्यम से आज भी जीवित हैं और छत्तीसगढ़ी लोक-संत परंपरा में सामाजिक और आध्यात्मिक मार्गदर्शन का एक सशक्त स्रोत बने हुए हैं।

